पाठ 14

जीप पर सवार इल्लियाँ

इतना मैं निश्चित रूप से कह सकता हूँ कि चने के पौधे होते हैं, पेड़ नहीं होते। चने का जंगल नहीं होता, खेत होते हैं। चने के झाड़ पर चढ़ने वाली बात सरासर गलत है, कपोल कल्पना है। इससे आगे चने के बारे में मेरी जानकारी इतनी ही है, जितनी हर बेसन खाने वाले की होती है कि वाह क्या बात है आदि। मुझसे यदि चने पर भाषण देने के लिए कहा जाए, तो मैं कुछ यों शुरू करूँगा कि भाइयो, जिस तरह सूर्य मेरे मकान के इस बाजू उगकर उस बाजू डूब जाता है, उसी तरह चना भी खेत में उगकर आदमी अथवा घोड़े के मुँह में डूब जाता है। इतना कहकर मैं अपना स्थान ग्रहण कर लूँगा—यह भय बताकर कि समय अधिक हो रहा है। बात यह है कि मेरे मुँह में पानी आ जाने के कारण, अधिक बोल नहीं सकूँगा। चना मेरी कमजोरी है। यह कमजोरी मुझे ताकत देती है। सिर्फ खाते समय, बोलते समय नहीं।

पर इधर शहर के अख़बारों में चने की चर्चा ज़रा जोरों पर है। इन दिनों मौसम खराब रहा। हम तो घर में घुसे रहे। पर पता नहीं कि बाहर पानी गिरा और ठंड बढ़ गई। इसका नतीजा यह हुआ कि शहर के आसपास चने के खेत में इल्ली लग गई। अख़बारों में शोर हुआ कि चने में इल्ली लग गई है और सरकार सो रही है वगैरह। एक अख़बार ने चने के पौधे पर बैठी इल्ली की तस्वीर भी छापी, जिसमें इल्ली सचमुच में सुंदर लग रही थी। चना हमने भी कम नहीं खाया, पर देखिए पक्षपात कि तस्वीर इल्ली की ही छपी।

मैं इल्ली के विषय में कुछ नहीं जानता। कभी परिचय का सौभाग्य नहीं प्राप्त हुआ। इल्ली से बिल्ली और दिल्ली तक की तुक मिलाकर एक बच्चों की कविता लिख देने के सिवाय मेरी समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करूँ, पर लोग थे कि इल्ली का ज़िक्र ऐसे इत्मीनान से करते थे, जैसे पड़ोस में रहती हो।

मेरे एक मित्र हैं। ज्ञानी हैं यानी, पुरानी पोथियाँ पढ़े हुए हैं। मित्रों में एकाध मित्र बुद्धिमान भी होना चाहिए। इस नियम को मानकर मैं उनसे मित्रता बनाए हुए हूँ। एक बार विद्वता की झोंक में उन्होंने बताया था एक नाम 'इला।' कह रहे थे कि अन्न की अधिष्ठात्री देवी है इला यानी पृथ्वी। मुझे बात याद रह गई। जब इल्ली लगने की खबरें चलीं, तो मैं सोचने लगा कि 'इला' का 'इल्ली' से क्या संबंध? इला अन्न की अधिष्ठात्री देवी हैं और इल्ली अन्न की नष्टार्थी देवी। धन्य हैं, ये इल्लियाँ इसी इला की पुत्रियाँ।

अपनी ममी मादाम 'इला' की कमाई खाकर अख़बारों में पब्लिसिटी लूट रही हैं। मैं अपने इस इला–इल्ली ज्ञान से प्रभावित हो गया और सोचने लगा कि कोई विचार गोष्ठी हो, तो मैं अपनी बुद्धि का प्रदर्शन करूँ, पर ये कृषि विभाग वाले अपनी गोष्ठी में हमें क्यों बुलाने लगे?

जब अख़बारों ने शोर मचाया तो नेताओं ने भी भाषण शुरू किए या शायद नेताओं ने भाषण दिए, तब अख़बारों ने शोर मचाया। पता नहीं पहले क्या हुआ? खैर सरकार जागी, मंत्री जागे, अफ़सर जागे, फाइल उदित हुईं। बैठकें चहचहाई, नींद में सोए चपरासी केंटीन की ओर चाय लेने चल पड़े। वक्तव्यों की झाड़ुएँ सड़कों पर फिरने लगीं। कार्यकर्ताओं ने पंख फड़फड़ाए और वे गाँवों की ओर उड़ चले। सुबह हुई। रेंगती हुई रिपोर्टों ने राजधानी को घेर लिया और हड़बड़ा कर आदेश निकले। शहर के आसपास यह होता रहा पर बंदा अपना छह पृष्ठ का अख़बार दस पैसों में पढ़ता यहीं बैठा रहा।

एक दिन एक कृषि अधिकारी ने कहा, ''चलो इल्ली उन्मूलन की प्रगति देखने खेतों में चलो। तुम भी बैठो हमारी जीप में।'' मैंने सोचा, चलो इसी बहाने पता लग जाएगा कि चने के पौधे होते हैं या झाड़ और मैं जीप में सवार हो लिया। रास्ते भर मैं उनके विभाग के अन्य अफ़सरों की बुराइयाँ करता, उनका मनोरंजन करता रहा। कोई डेढ़ घंटे बाद हम एक ऐसी जगह पहुँच गए, जहाँ चारों तरफ खेत थे। वहाँ एक छोटा अफ़सर खड़ा इस बड़े अफ़सर का इंतजार कर रहा था। हम उतर गए। मैंने गौर से देखा, चने के पौधे होते हैं, खेत होते हैं।

हम पैदल चलने लगे। चारों ओर खेत थे। मैंने एक किसान से पूछा, ''तुम खेतों को खोदते हो तो क्या निकलता है?''

वह समझा नहीं। फिर बोला, ''मिट्टी निकलती है।''

''इसका मतलब है प्राचीन काल में भी यहाँ खेत ही थे,'' मैंने कहा। मेरी जरा इतिहास में रुचि है। खुदाई करने से इतिहास का पता लगता है। अगर खुदाई करने से नगर निकले, तो समझना चाहिए कि यहाँ प्राचीन काल में नगर और सिर्फ मिट्टी निकले तो समझना चाहिए कि खेत थे।

आगे–आगे बड़ा अफ़सर, छोटे अफ़सर से बात करता जा रहा था।

''इस खेत में तो इल्लियाँ नहीं हैं?'' बड़े अफ़सर ने पूछा।

''जी नहीं हैं'' छोटा अफ़सर बोला।

''कुछ तो नजर आ रही हैं।''

''जी हाँ, कुछ तो हैं।''

''कुछ तो हमेशा रहती हैं।''

''खास नुकसान नहीं करतीं।''

''फिर भी खतरा है।''

''कभी भी बढ़ सकती हैं।''

''जी हाँ, बढ़ सकती हैं।''

''सुना है, सारा खेत साफ कर देती हैं।''

''बिलकुल साफ कर देती हैं।''

''इस खेत पर छिड़काव हो जाना चाहिए।''

''जी हाँ, हो जाना चाहिए।''

''तुम्हारा क्या खयाल है?''

''जैसा आप फरमाएँ।'' छोटे अफ़सर ने नम्रता से कहा। फिर वे दोनों चुपचाप चलने लगे।

''जैसी पोजीशन हो मुझे बताना, मैं हुक्म कर दूँगा।''

''मैं जैसी पोजीशन होगी, आपके सामने पेश कर दूँगा।''

''और सुनो।''

''जो हुक्म।''

''मुझे चना चाहिए, हरा बूट। घर ले जाना है। जीप में रखवा दो।''

''अभी रखवाता हूँ।''

''छोटा अफ़सर किसान की तरफ लपका।''

''ओय, क्या नाम है तेरा।''

किसान भाग कर पास आया। छोटे अफ़सर ने उससे घुड़ककर कहा, ''अबे तेरे खेत में इल्ली है?''

''नहीं है हुजूर''

''अबे थी ना, वो कहाँ गई?''

''हुजूर पता नहीं कहाँ गई?''

''अबे बता, कहाँ गई सब इल्लियाँ?''

किसान हाथ जोड़कर काँपने लगा। उसे लगा इस अपराध में उसका खेत जब्त हो जाएगा। छोटे अफ़सर ने क्रोध से सारे खेत की ओर देखा और फिर बोला, ''अच्छा खैर, जा, हरा–हरा चना छाँटकर साहब की जीप में रखवा दे। चल ज़रा जल्दी कर।''

किसान खेत से चने के पौधे उखाड़ने लगा। छोटा अफ़सर उसके सिर पर तना पड़ा था। इधर मैं और बड़ा अफ़सर चहलकदमी करते रहे। वह बोला, ''मुझे खेतों में अच्छा लगता है। यहाँ सचमुच जीवन है, शांति है, सुख है।'' वह जाने क्या–क्या बोलने लगा। उसने मुझे मैथिलीशरण गुप्त की ग्राम जीवन पर लिखी कविता सुनाई जो उसने कभी आठवीं कक्षा में रटी थी। कहने लगा, ''मेरे मन में जब यह कविता उठती है, मैं जीप पर सवार होकर खेतों में चला आता हूँ।'' मैं बूटे तोड़ते किसान की ओर देखता सोचने लगा–''गुप्तजी को क्या पता था कि वे कविता लिखकर क्या नुकसान करवा देंगे।''

कुछ देर बाद हम लोग जीप पर सवार हो आगे बढ़ गए। किसान ने हमें जाते देख राहत की साँस ली। जीप में हरे चनों का ढेर पड़ा था। मैं खाने लगा वे लोग भी खाने लगे। एकाएक मुझे लगा कि जीप पर तीन इल्लियाँ सवार हैं, जो खेतों की ओर चलीं।

शरद जोशी

शब्दार्थ

कपोल–कल्पना	– मन की गढ़ी हुई बात, कल्पना	अधिष्ठात्री	– माता
उन्मूलन	– जड़ से उखाड़ देना	इत्मीनान	– धैर्य, धीरज
वक्तव्य	– कथन		

अभ्यास कार्य

पाठ से

सोचें और बताएँ

1. खेतों में इल्ली लगने का क्या कारण बताया?
2. लेखक को कृषि अधिकारी कहाँ ले गए?
3. किसान कब और क्यों घबराया?

लिखें

बहुविकल्पी प्रश्न

1. अन्न की अधिष्ठात्री देवी कहा गया है–

   (क) इला को (ख) इल्ली को

   (ग) नष्टार्थी देवी को (घ) कृषि विभाग की गोष्ठी को ( )

2. ''मुझे खेतों में अच्छा लगता है। यहाँ सचमुच जीवन है, शान्ति है, सुख है।'' किसने कहा–

   (क) किसान ने (ख) छोटे अफ़सर ने

   (ग) बड़े अफ़सर ने (घ) लेखक ने ( )

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. पाठ के लेखक का नाम बताइए।

2. इल्लियों को किसकी पुत्री बताया गया है?
3. किसान को जीप में क्या रखने को कहा गया?

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. ''खैर सरकार जागी, मंत्री जागे, अफ़सर जागे, फाइलें उदित हुईं।'' ऐसा किसने और क्यों कहा?
2. पाठ में अफ़सरों की किस मनोवृत्ति पर व्यंग्य किया गया है?

दीर्घ लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. अख़बारों में किस बात की चर्चा होने लगी और क्यों?
2. लेखक ने इला को अन्न की अधिष्ठात्री देवी तथा इल्ली को अन्न की नष्टार्थी देवी क्यों बताया?

भाषा की बात

1. इस पाठ में 'पब्लिसिटी' शब्द आया है जो अंग्रेज़ी भाषा का है, जिसका अर्थ होता है–प्रचार–प्रसार। पाठ में आए अन्य अंग्रेजी शब्दों की सूची बनाइए और उनका अर्थ लिखिए।
2. पाठ में आए निम्न भाषिक तत्त्वों के उदाहरण छाँटिए–
   1. मुहावरे
   2. प्रत्यय
   3. उपसर्ग
   4. सन्धि शब्द
3. काँच से तरह–तरह की चीज़ें बनती हैं। इस वाक्य में रेखांकित शब्दों को कई प्रकार से प्रयोग कर सकते है; जैसे बाजार में आजकल तरह–तरह के मोबाइल प्रचलन में हैं। आप भी नीचे लिखे वाक्यों में से रेखांकित शब्दों का प्रयोग कर नए वाक्य बनाएँ–
   1. जिसमें इल्ली सचमुच सुन्दर लग रही थी।
   2. बड़े अफ़सर चहलकदमी करते रहे।
   3. मेरे जाते ही किसान भागकर आया।
4. भाषा में कुछ ऐसे शब्द होते हैं जो वाक्यों में प्रयुक्त होने पर अर्थवान हो जाते हैं तथा विचारों को स्पष्ट करने में एक विशेष भूमिका निभाते हैं। सार्थक शब्दों के द्वित्व रूप अपना मूल अर्थ छोड़कर एक विशेष अर्थ देते है; जैसे –
   1. घड़ी की टिक–टिक रात को सुनाई देती है।
   2. मक्खियाँ गंदगी पर भिन–भिन करती हैं।

   आप भी ऐसे शब्दों की सूची बनाकर वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

पाठ से आगे

1. 'जीप पर सवार इल्लियाँ' एक व्यंग्य पाठ है। व्यंग्य की ऐसी रचनाएँ और पढ़िए।
2. जब आप अफ़सर बन जाएँगें, तो क्या–क्या कार्य करना चाहेंगे? कल्पना के आधार पर लिखिए।

तब और अब

नीचे लिखे शब्दों के मानक रूप लिखिए–

विद्वता, बुद्धिमान, मिट्टी, हैँ

जानें, गुनें और जीवन में उतारें

''परिवार नागरिक जीवन की प्रथम पाठशाला है।''